पाठ्यक्रम का मासिक विभाजन
सत्र 2025–25
कक्षा–**12**
विषय–संगीत (गायन)

क्र0सं0	माह	पाठ्यक्रम	खण्ड–क, ख
1	अप्रैल	श्रुतियाँ वीणा के 36 तार पर शुद्ध स्वरों का स्थान। राग वृन्दावनी सारंग–विस्तृत अध्ययन पूर्ण परिचय आरोह–अवरोह पकड, आलाप, छोटाख्याल स्वरलिपि सहित उचित आलाप तान, मुर्की एवं अन्य लयपूर्ण ताल बद्ध निस्तारण के साथ गाने की योग्यता।	(क) (ख) (क)
2	मई	अशं, न्यास, अल्पत्व बहुत्य, तान एवं तान के प्रकार। पूर्व राग, उत्तर राग, सन्धि प्रकाश राग, आश्रय राग, परमेल प्रवेशक राम। गायन शैलियां और प्रकार–घुपद, घमार ख्याल, टप्पा, ठुमरी, तराना।	(क) (ख) (ख)
3	जून	ग्रीष्मावकाश	
4	जुलाई	राग गौड सारंग सामान्य का अध्ययन–परिचय आरोह–अवरोह, पकड, छोटा ख्याल स्वर लिपि सहित लिखने एवं गाने तथा राग पहचानने का अभ्यास। भारत की हिन्दुस्तानी और कर्नाटक पद्धतियो के स्वरों एवं श्रुतियों का तुलनात्मक अध्ययन। ख्याल (विलम्बित और दुत ख्याल) उदाहरण सहित। स्वर विस्तार के माध्यम से रागों का विकास और भेद कठिन अंलकारों की रचना।	(ख) (ख) (ख)
5	अगस्त	राग केदार का विस्तुत अध्ययन–पूर्ण परिचय आरोह–अवरोह पकड, आलाप, छोटाख्याल स्वर लिपि सहित उचित, आलाप, तान, मुर्की एवं अन्य लय पूर्ण तालबद्ध विस्तारण के साथ गाने की योगयता। तीनताल और झपताल का परिचय एक गुन, दुगुन, तिगुन, चौगुन लिखने एवं हाथ पर ताली देकर बोलने का ज्ञान। टप्पा, ठुमरी और तराना का परिचय उदाहरण सहित। राग के दार की तानो का अभ्यास। गीतों के आलाप, तान, बोलतान सहित लिपिबद्ध करने की क्षमता।	(ख) (ख) (ख) (ख) (ख)
6	सितम्बर	तानपुरे के विभिन्न अगों का ज्ञान, उसको मिलाने की विधि उसके अधि स्वर आदि का विशेष अध्ययन। राग पूर्वी का सामान्य अध्ययन परिचय, आरोह–अवरोह, पकड छोटाख्याल स्वर लिपि लिखने एवं गाने का ज्ञान। ग्वालियर घराने की विशेषता। एक ताल का	(क) (ख) (ख)

		परिचय एक गुन दुगुन, तिगुन, चौगुन को लिखने एवं हाथ पर ताली देकर बोलने का अभ्यास। उत्तर तथा दक्षिण भारत के थाटों का वर्गीकरण और उससे रागों की उत्पत्ति।	
7	अक्टूबर	संगीत सम्बन्धी विषय पर निबन्ध । राग जौनपुरी का विस्तृत अध्ययन पूर्ण परिचय, आरोह–अवरोह पकड, आलाप, छोटाख्याल स्वरलिपि सहित उचित आलाप तान. मुर्की, कण एवं अन्य लय विस्तारण के साथ गाने का ज्ञान। भारतखण्डे और विष्णुदिगम्बर जी का जीवन परिचय एवं संगीत मे योगदान। प्रयोगात्मक परीक्षा के लिए प्रस्तावित पाठ्यक्रम के रागों की विशेषताएँ। चारताल का पूर्ण परिचय–एक गुन, दुगुन, तिगुन, चौगुन लिखने एवं हाथ पर ताली देकर बोलने का अभ्यास। प्रयोगात्मक–रागों के गीतों में कम से कम एक धमार, एक विलम्बित ख्याल व तराना होगा। धमार में दुगुन, तिगुन और चौगुन लयकारी होने की क्षमता होनी चाहिये। अर्धवार्षिक परीक्षा का आयोजन।	(ख) (ख) (ख) (ख)
8	नवम्बर	भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास (मध्य एवं आधुनिक काल)	(ख)
9	दिसम्बर	राग हमीर का सामान्य अध्ययन–परिचय, आरोह–अवरोह पकड़, छोटाख्याल स्वरलिपि सहित, लिखने एवं गाने का अभ्यास । गोपाल नायक, पं० जसराज और एम०एम० सुब्बालक्ष्मी का जीवन परिचय एवं संगीत में योगदान। धमार ताल का परिचय–एक गुन, दुगुन, तिगुन, चौगुन लिखने एवं हाथ पर ताली देकर बोलने का अभ्यास। विद्यार्थी में पाठ्यक्रम के सभी तालों को ठेका तबले पर बजाने की योग्यता। छोटे–छोटे स्वर समुदायों द्वारा राग को पहचानकर उनकी बढ़त करने की योग्यता। खण्ड (ख) प्रयोगात्मक–पाठ्यक्रम में प्रस्तावित विस्तृत अध्ययन के रागों में छोटे स्वर समुदाय की जब आकार में गाया तब स्वर पहचानने की योग्यता होनी चाहिये।	(ख) (ख) (ख)
10	जनवरी	पाठ्यक्रम के प्रस्तावित सभी रागों एवं तालों की पुनरावृत्ति. उसके साथ सम्पूर्ण पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति प्री–बोर्ड लिखित परीक्षा का आयोजन।	

		पढ़ाये गये पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति	
11	फरवरी	बोर्ड की लिखित परीक्षा का आयोजन।	